ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

April - 2022
Vol. II No. 22

Editor-in-Chief
Dr. Shaikh Parvez Aslam
Assistant Professor & Head Dept. of English,
Lokseva Education Society's Arts & Science College,
Aurangabad. (MS)

EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

CamScanner

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

भारतीय संगीत मे गज़ल

डॉ.वैशाली देशमुख

भारतीय संगीत का इतिहास विश्व में प्राचीनतम् माना जाता है। विश्व की निर्मिती जब से हुई लगभग वही से संगीत का जन्म माना जाता है। क्योंकी इतिहास में संगीत के उदय का काल वैदिक युग माना है। और वह युग इ.स.पू.२००० यह माना जाता है। वैदिक काल में तीन स्वरोंपर आधारीत भारतीय संगीत हर एक शतक में परीवर्तनताकी ओर विकसित हुआ। भारतवर्ष का इतिहास अनेक शताब्दीयों का इतिहास माना जाता है। भारत में परकीय आक्रमणों से सामाजिक सांस्कृतिक परंपराओं मे परीवर्तन हुआ दिखाई देता है।

परीवर्तनसेही भारतीय संगीत विकास की और बढा है। और इसी कडी में आगे अरब और फारसी संगीत का भारतीय संगीत पर प्रभाव /परीणाम होकर वह विकसित होने लगा। नयी गीतशैलीयोंकी उत्पत्ती होकर वह विकसित होने लगी। मुघलकाल में भारतीय संगीतपर परीणाम होकर अरबी, इरानी, फारसी संगीत का मिश्रण भारतीय संगीत में होने लगा। और फिर एक नयी धृपद गायन परंपरा जो भारतीय संगीत मे चली आ रही थी उसमे ख्याल गायकी की गीतशैली निर्माण होकर वह एक खास शैली बन गयी। उसके बाद अरबी फारसी संगीत का और परीणाम होकर गज़ल गायकी की शुरुआत हुई।

गज़ल का रूप प्राचीन माना जाता है। इसकी उत्पत्ती ७ वी शताब्दी में अरबी कवीता से हुई है ऐसा मानना है। कुछ विद्वानोंका मानना है की, तकरीबन १०००साल पहले गज़ल का जन्म इरान में हुआ और वही फारसी भाषा में गज़ल को लिखा गया। ऐसा कहा जाता है की, गज़ल की उत्पत्ती कसीदे से मानी जाती है। कसीदे का मतलब कसींदे राजाओं की तारीफ में कहे जाते थे। और शायर अपनी रोजी रोटी के लीये राजाओं महाराजाओं की तारीफ इस कसीदों मे करते थे। शायर कसीदों मे स्त्रीयों कें बारे में भी कहने लगे और राजाओं को वह पसंद आने लगा और यही सें गज़ल का मतलब औरंतो के बारेंमे जिक्र करना हो गया। यही पर गज़ल का बहर शास्त्र फारसी भाषामें बना।

भारत वर्ष पर मुघलोंका शासन जब चलने लगा तो वह फारसी संस्कृतीका प्रचार शुरू हुआ और राजकीय और न्यायालयीन भाषा फारसी भाषा कर दी गयी। पहले शौरसेनी भाषा का इस्तेमाल होता था और यह भाषा संस्कृत भाषासे निकली हुई थी। आम जनता उसी को प्रयोग में लाते थे लेकीन सरकारी कामकाज की भाषा फारसी करने से सभी को फारसी सीखनी पडी। कवीयों को, शायरोंको फारसी भाषा सीखनी पडी और उन्होने गज़ल से रीश्ता बनाके उसका बहर शास्त्र सीख लिया। उस शास्त्र को अरुज कहा जाता था। और यही से गज़ल का सफर शुरू हुआ।

इ.स. १३५३ में दिल्ली के अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो नें देहलवी खडी भाषा में फारसी और हिंदी को मिश्रीत कर नये प्रयोग से हिंदवी भाषा शुरू की। खुसरों ने भारत में फारसी भाषा का प्रचार किया। और सभी जगहों पर फारसी भाषा का ही इस्तेमाल होने लगा और इसिलीये खुसरों को ही पहला गज़लगो भी कह सकते है। खुसरोंने उस वक्त बोली भाषा में लिखा।

जेहाल-ए-मिस्की मुकुन तगाफुल दुराये नैना बनाये बतियाँ
किताब - ए- हिज्रा न दारम ऐ जा न लेहु काहे लगाये छतिया।।

गज़ल शब्द अरबी भाषा का शब्द है। और वह गजाला से आया है। गजाला का अर्थ है हिरन। हिरन अर्थ गज़ल के रूप में एक हिरन का विलाप ऐसा माना जाता है। जो हर गज़ल में एक तरफा प्यार का विषय लिखा जाता है।

अरबी साहीत्य की काव्य विधा के रूप में गज़लों की शुरूवात हुई है। अरबी भाषा की गज़लो में औरतों के या प्रेमिका के बारें मे ही बांते होती थी। क्योंकी गज़ल का अर्थ ही औरतों के बारें मे बाते करना, गुफ्तगू करना है।फारसी भाषा में गज़ल विकसित होकर सिर्फ स्त्रीयों का विषय न रहकर वह अध्यात्मिक रूप में विकसित होने लगी। गज़ल का अर्थ केवल भौतिक नही रहा तो वह अध्यात्मिक प्रेम में विकसित होने लगा। अरबी साहीत्य में इश्के मजाजी का फारसी

CamScanner
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

साहीत्य में इश्के हकीकी हो गया। फारसी गज़ल मे प्रेमी को सादिक (साधक) और प्रेमिका कों माबूद (ब्रम्ह) का दर्जा मिल गया।

इसके बाद फारसी सें उर्दु भाषा में प्रवेश करते समय गज़ल का रुप भारतीय हो गया। अमीर खुसरों की परंपरा जो १२ वी शताब्दी से चली आ रही थी वह दक्कन के वली दकनी, सिराज दाऊद इन शायरोंने इस परंपरा को १३ वी शताब्दी मे भी आगे बढाया। दक्किनी उर्दु शायरोंने अरबी फारसी भाषा को बदलकर उर्दु में भारतीय संस्कार, रूढियों को लेकर अनेक रचनाओं की निर्मीती की है। और यही से आगे उर्दु भाषा के साहित्य में हजारों गज़लो की निमिर्ती की गयी और वह सफर आज तक चलता आ रहा है और आगे बखुबी बहोत चलेगा।

गज़ल का अर्थ :-

गज़ल का शब्द सर्वप्रथम अरबी भाषा से आया है। और वह अरबी भाषा काही शब्द है। अरबी भाषा में गज़ला का अर्थ हिरन। गज़ला से गज़ल शब्द की उत्पत्ती मानी जाती है ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है। विदवानो का यह भी कहन है की गज़ल का अर्थ औरंतों से या औरंतों के बारे मे बातें करना। गज़ल एक काव्य प्रकार है। और उसमे गेयता होने के कारण सभी भाषा कें साहीत्य मे वह लोकप्रिय है।

गज़ल का स्वरुप - गज़ल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गये शेरों का समुह होता है। बहर का अर्थ है चाल, लय, धून, और कहा जा सकता है की, एक जैसा मिटर। इसका अर्थ यही है की, एक ही वजन के अनुसार शेरों को लिखा जाता है।

मतला - गज़ल के पहले शेर को मतला कहा जाता है।

मक्ता - गज़ल के अंतिम शेर को मक्ता कहा जाता है। मक्ते में शायर अपना नाम लिखते है। गज़ल में शेरों की संख्या विषम होती है जैसे तीन, पाच, सात, नौ इ. एक गज़ल में पाच शेर से लेकर २५ शेर हो सकते है। ये शेर एक दुसरे से स्वतंत्र होते है।

कता बंद शेर - जो शेर एक से अधिक शेर मिलकर अर्थपूर्ण होते है ऐसे शेर कता बंद कहलाते है।

गज़लों में काफिया और रदिफ मिसरा -

काफीया - गज़ल में शेरो में तुकांत शब्दों को काफीया कहा जाता है। तुकांत का मतलब तुक में शब्दबंद होनेवाला शब्द, उसी को काफीया कहा जाता है। काफीया गज़ल के कीसी शेर की पंक्ती को तुंकांत कहते है। मतलब कीसी शेर के आखरी मे 'आता है' ऐसा लिखा है तो आगे कि पंक्ती में भी ऐसाही आता है। 'पाता है'या 'लाता है' ऐसे शब्दों सें पंक्ती पुरी की जाती है। उसी को काफीया कहा जाता है। इसमें शायरी का बडा महत्व होता है।

रदीफ - शेरो में दोहराए जाने वाले शब्दों को रदीफ कहा जाता है।

मिसरा - शेर की पंक्ती को मिस्रा कहा जाता है।

शाहे बैत - गज़ल के सबसे अच्छे शेर को शाहे बैत कहा जाता है।

दिवान - सबसे अच्छे शेर के संग्रह को दिवान कहते है।

गज़ल के प्रकार -

तुकांतता के आधार पर गज़लों के दो प्रकार होते है।

१) **मुअद्दस गज़ल** - जिन गज़ल कें अशआरों मे रदिफ और काफिया दोनों का ध्यान रखा जाता है।उस गज़ल को मुअद्दस गज़ल कहा जाता है।

२) **मुकफ्फा गज़ल** - जिन गज़ल के अश आरोंमे केवल काफीया का ध्यान रखा जाता है। उस गज़लो को मुकफ्फा गज़ल कहा जाता है।

भाव के आधार पर गज़लों के दो प्रकार -

१) **मुसल्सल गज़ल** - जिन गज़लो में शेरो का भावार्थ एक दुसरोंसे जुडा होता है। उस गज़लो को मुसल्सल गज़ल कहा जाता है।

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

CamScanner

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

२) गैर मुसल्सल गज़ले- जिन गज़लों में हर शेर का भावार्थ अलग अलग होता है। उस गज़लो को गैर मुसल्सल गज़ल कहा जाता है।

गज़लों में प्रमुख गज़लकारों के नाम इस तरह से है -

अली शिर नवाए ने फारसी गज़लों को अवगत कराया। और मोहम्मद कुली कुतूब शह भारत में उर्दु गज़लों के शुरुआती अभ्यासकर्ता थे।

१) अमीर खुसरो - इ.स. १२३५ - १३२५
जेहाल - ए मिस्कीन

२) मीर तकी मीर - इ.स. १७२३ - १८१०
देखा तो दिल की जाँ से उठता है।

३) मिर्जा गालीव - इ.स. १७९७ - १८६९
आह को चाहिए इक उम्र असर दिल ए नादाँ तुझे हुआ क्या है।

४) वली दक्कनी - इ.स. १६६७ - १७०७
जिसे इश्क का तीर कारी लगे

५) फिराख गोरखपुरी - इ.स. १८९६ - १९८२
बहुत पहेलेसे उन कदमों की आहट जान लेते है।

६) मोमीन खाँ मोमीन - इ.स. १८०० - १८५२
असर उसको जरा नही होता।

७) जिगर मुरादाबादी - इ.स. १८९० - १९६०
आदमी आदमी से मिलता है।

८) दाग देहलवी - इ.स. १८३१ - १९०५
तुम्हारे खत में नया इक सलाम किसका था।

९) मजह्रह सुलतानपूरी - इ.स. १९१९ - २०००
कोई हमदम ना रहा, कोई सहारा ना रहा।

१०) साहीर लुधियानवी - इ.स. १९२१ - १९८०
कभी खुद पे कभी हालात पें रोना आया।

११) निदा फाजली - इ.स. १९३८ - २०१६
कभी किसी को मुक्कम्मल जहाँ नही मिलता।

१२) शकीर बदायुनी - इ.स. १९१६ - १९७०
ऐ मोहोब्बत तेरे अंजाम पें रोना आया।

१३) फैज मोहम्मद फैज - इ.स. १९११ - १९८४
हम पर तुम्हारी चाह का इल्जाम ही तो है,
आप की याद आती रही रात भर।

१४) बशीर बद्र - इ.स. १९३५
सर से पा तक वो गुलाबों का शजार लगता है,
खुदा हमको ऐसी खुदाई न दे।

१५) अहमद फराज - इ.स. १९३१ - २००८
रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ।

१६) कैफी आजमी - इ.स. १९१९ - २००२

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad
CamScanner

ISSN 2277 - 7639 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

झुकी झुकी सी नजर बेकरार है के नही,
तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो ।

१७) गुलजार - इ.स. १९३६

हाथ छुटे भी तो रिश्ते नही छोडे करते ।

१८) दुष्यंत कुमार - इ.स. १९३३ - १९७५

वो आदमी नही है मुकम्मल बयान है ।

१९) हसरत मोहनी - इ.स. १८७८ - १९५१

चुपके चुपके रात दिन आसू बहाना याद है ।

२०) वसीम बरेलवी - इ.स. १९४०

अपने हर हर लफ्ज का खुद आईना हो जाऊंगा ।

२१) नासीर काजमी - इ.स. १९२५ - १९७२

दिल धडकने ने का सबब याद आया ।

२२) बहादुर शहा जफर - इ.स. १७७५ - १८६२

बात करनी मुझे मुश्कील कभी ऐसी तो ना थी ।

२३) अमीर मिनाई - इ.स. १८२९ - १९००

सरकती जाये है रुख से नकाब आहीस्ता ।

इन सभी शायरोंने गज़लकारोने बहोत बडा योगदान गज़ल गीतशैली को दिया है । इन सभी गज़लकारों की गज़लों ने गज़ल गानविधा को एक उचाई पर पहुंचा दिया है । और उसका सारा श्रेय इन गज़लकारों को देना अनिवार्य है । इस प्रकार से गज़ल का इतिहास पया जाता है । एक बेहेतरीन गान विधा होने के कारण गज़ल सभी वर्ग में सुनी जाती है । किसी भी उम्र के व्यक्ति को गज़ल सुनना, गाना अच्छा लगता है । क्योंकी उसमे निहीत जो भाव-भावनाऐं होती है । इसिलीये यह गानविधा सर्वश्रुत है । शास्त्रीय संगीत का गज़ल के साथ बडाही गहरा रिश्ता है । क्योंकी गज़ल गाने के लिये शास्त्रीय संगीत का अभ्यास होना जरुरी है । इसिलीये कुछ विद्वान, शास्त्रीय संगीत का ही एक प्रकार गज़ल को मानते है । गज़ल यह गानविधा ७वी शताब्दी से चली आ रही है । और अनेक वर्ष तक कायम रहेगी । क्योंकी भावभावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिये गज़ल गानविधा एक अच्छी गानविधा मानी जाती है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१) गज़ल से गज़ल तक - अशोक अंजूम
२) हिंदी गज़ल - संदर्भ और सार्थकता - डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ
३) संगीत रत्नावली - वसंत
४) संगीत - संगीत कार्यालय, हाथरस
५) संगीत विशारद - वसंत

डॉ.वैशाली देशमुख
सहयोगी प्राध्यापक, विभाग प्रमुख,संगीत विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

CamScanner
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad